पुस्तक समीक्षा "काशी मरणान्मुक्ति"

प्राप्त पुस्तक – "काशी मरणान्मुक्ति"
लेखक – "मनोज ठक्कर'
– "रश्मि छाजेड़'
प्रकाशक – 'शिव ॐ साई प्रकाशन" 95/3 बल्लभ नगर इन्दौर–452003, म0प्र0
मुद्रक– प्रिन्ट पैक प्रा0 लि0, इन्दौर
संस्करण – प्रथम संस्करण, सितम्बर 2010
– द्वितीय संस्करण, जून 2011
– तृतीय संस्करण, अक्टूबर 2011

इस पुस्तक के जून 2011 संस्करण की प्रतियाँ समीक्षा हेतु प्राप्त हुई हैं। सम्पूर्ण रचना को "69 अध्याय" में क्रमागत किया गया है। प्रत्येक अध्याय बाम पृष्ठीय क्रमागत है। अध्याय के प्रारम्भ में सारगर्भित, सरल हिन्दी भाषा में तत् सम्बन्धी भारतीय पोराणिक कथ्यों एवं तथ्यों सहित श्रृंगारित किया गया है। जिसकी भाषा सहज है एवं भारतीय अध्यातम दर्शन के सिद्धांतों का सरल प्रतिरूपण बाम पृष्ठीय प्रारब्ध में प्रतिबिबिंत है। अध्याय छोटे–छोटे हैं यद्यपि इस पुस्तक में विश्व प्रसिद्ध काशीनगरी के प्राचीन अरबाचीन महत्वता एवं निवास प्रतिफल की व्याख्या की गई है जिसके लिए अलग–अलग विभिन्न धार्मिक ग्रंथों एवं पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ता था, परन्तु यहाँ इन सब का समावेश एक साथ इस सरल हिन्दी भाषा युक्त पुस्तक में साक्षात्कार दर्शित है। इस पुस्तक को एक उपन्यास के रूप में आलेखित किया गया है जिसमें पात्रों की संख्या भी काफी कम ही रखी गई है। इन पात्रों के नाम भी सरल एवं समाज के बीच से ही संयोए गए हैं। इनके नाम जैसे मूतू चाचा, इस्माईल चाचा, महा यशोदा आदि बहुत ही प्रचलित से पात्र लगते हैं। प्रत्येक अध्याय में एक पृष्ठीय कृष्ण रेखा चित्रिका भी अपना स्थान रखती है जिसमें पुरातन काल के अस्थल एवं निर्माण तथा साधकों को दर्शाया गया है। पुस्तक में द्वैत एवं अद्वैत, मरण मुक्ति, पंचतत्व, चिता एवं शव आवेष्टन एवं शव जलन आदि के वास्तविक

मार्मिक गूढ़ तथ्यों के रहस्यों का अनावरण किया गया है। जिन्हें कोई अल्पगय भी आसानी से इसे पढ़कर समझ सकता है। यद्यपि साधन व साधना कठिन हो सकती है। इसी उपन्यास के पात्र भुतू चाचा एवं महा काशीनगरी के महा शमशान मणिकर्णिका घाट पर चांडाल का कृत्य करते–करते ब्रहमजन एवं मुक्तिपथ की साधना स्वयं करने लगे एव अंत में मोक्ष की प्राप्ति हुई। महामृणगंम को महा बनाने में, उसकी धात्री माँ यशोदा भूतू चाचा का बड़ा हाथ है। समाधि जैसी अवस्था अनुभव हेतु इस्माइल चाचा की शहनाई किसी दैवीय संगीत का कार्य महाहेतु किया। विषम परिस्थितियों के बावजूद अपने कर्म को परिणाम प्रदान किया।

पुस्तक में देवों के देव महादेव के सभी रूपों का पुनप्रतीपादन किया गया है। साथ ही कई देवों के कई अन्य रूपों को भी विभिन्न मंदिरों आदि में प्रकाशित किया गया है। वह निर्वाघ साधना व शव चिताग्नि साधना विसर्जन आदि एक शिव पूजन रूप में करता है। पुस्तक के अध्यायों के क्रमिक पाठन से ऐसा लगता है कि व्यक्ति स्वयं काशी के शमशान में उपस्थित है व घटनाओं से उसके चक्षु साक्षात्कार कर रहे हैं। रहस्यमयी मुक्ति मार्ग एवम मंत्र विषय में भी जगह–जगह परिचर्चा है। सम्पूर्ण ग्रन्थ रोचक जीवन्त व फिल्म रील की तरह ही है। लेखकों को ग्रन्थ रूप में किसी दैवीय सत्ता से उपहार स्वरूप प्रदत्त प्रतीत होता है ग्रन्थ संग्रहीय व बार–बार पाठन योग्य है। सर्व साधारण को सुलभ हो इसके लिए यह भी आवश्यक है कि इसे दो या अधिक वाल्यूम में भी उपलब्ध कराया जाये जिसे प्रबुद्ध जिज्ञासु पाठक/साधक किश्तों में भी क्रमांक के विषय वस्तु का अनुश्रवण सरलता से कर सके।

पुस्तक समीक्षा हेतु प्रकाशक/ मुद्रक/ लेखकों द्वारा हमारे प्रकाशन को की चयन किया उसके लिए धन्यवाद सहित।

सम्पादक –द लखनऊ मिरर